नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव® बुक्स

अनिवार्य हिन्दी-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2024 का प्रश्न-पत्र
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2025

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 360/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- **मूल्य : ₹ 360.00**

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  *****

- ❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

अनिवार्य हिन्दी–कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचनात्मक लेखन	16
व्यावहारिक व्याकरण	8
पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग-2)	32
पाठ्यपुस्तक : **वितान** (भाग-2)	12

खण्ड-1

अपठित बोध **12 अंक**

(क) अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6 अंक

(ख) अपठित पद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6 अंक

खण्ड-2

रचनात्मक लेखन **16 अंक**

(1) निबन्ध लेखन (विकल्प सहित) (300 शब्द) 5 अंक

(2) पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय-पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) (विकल्प सहित) 4 अंक

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित–

(3) विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित दो बहुचयनात्मक एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न (40-45 शब्द) 4 अंक

(4) फीचर लेखन/आलेख (लगभग 100 शब्द) 3 अंक

व्यावहारिक व्याकरण **8 अंक**

(दो बहुचयनात्मक एवं छः रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न)

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 2 अंक

(2) शब्द शक्ति 2 अंक

(3) अलंकार—अनुप्रास, श्लेष, यमक, वक्रोक्ति, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, विभावना, संदेह, भ्रांतिमान — 2 अंक

(4) पारिभाषिक शब्दावली — 2 अंक

खण्ड-3

पाठ्यपुस्तक–आरोह-भाग 2 — **32 अंक**

(i) 1 सप्रसंग व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) — 1 × 6 = 6 अंक

(ii) 1 सप्रसंग व्याख्या पद्य भाग से (विकल्प सहित) — 1 × 6 = 6 अंक

(iii) किसी एक कवि या लेखक का परिचय (विकल्प सहित) (80-100 शब्दों में उत्तर) — 1 × 4 = 4 अंक

(iv) प्रश्नोत्तर गद्य भाग से तीन बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न — 08 अंक

(v) प्रश्नोत्तर पद्य भाग से तीन बहुचयनात्मक, एक लघूत्तरात्मक एवं विकल्प सहित एक दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न — 08 अंक

खण्ड-4

पाठ्यपुस्तक–वितान भाग 2 — **12 अंक**

(क) दो दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (60-80 शब्दों में उत्तर) — 6 अंक

(ख) दो बहुचयनात्मक एवं दो लघूत्तरात्मक प्रश्न — 6 अंक

निर्धारित पुस्तकें–

1. **आरोह-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

आरोह भाग-2

काव्य-खण्ड

1.	हरिवंश राय बच्चन	1-11
2.	आलोक धन्वा	11-18
3.	कुँवर नारायण	19-28
4.	रघुवीर सहाय	28-38
5.	शमशेर बहादुर सिंह	38-43
6.	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	44-53
7.	गोस्वामी तुलसीदास	53-65
8.	फिराक गोरखपुरी	65-70
9.	उमाशंकर जोशी	70-75

गद्य-खण्ड

10.	भक्तिन	(महादेवी वर्मा)	76-90
11.	बाजार दर्शन	(जैनेन्द्र कुमार)	91-108
12.	काले मेघा पानी दे	(धर्मवीर भारती)	108-119
13.	पहलवान की ढोलक	(फणीश्वरनाथ 'रेणु')	119-129
14.	शिरीष के फूल	(हजारी प्रसाद द्विवेदी)	129-142
15.	(i) श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा (ii) मेरी कल्पना का आदर्श समाज	(बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर)	142-153

वितान भाग-2

1.	सिल्वर वैडिंग	(मनोहर श्याम जोशी)	154-165
2.	जूझ	(आनन्द यादव)	165-176
3.	अतीत में दबे पाँव	(ओम थानवी)	176-186

अपठित बोध

1.	अपठित काव्यांश	187-207
2.	अपठित गद्यांश	207-223

रचनात्मक लेखन

1. निबन्ध-लेखन **224-270**

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
   अथवा
   सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 226

2. कृत्रिम बुद्धिमता (AI) वरदान या अभिशाप
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 226
3. वैश्विक महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षण 227
4. राजस्थान की सतरंगी संस्कृति 228
5. महिला सशक्तिकरण
अथवा
स्त्री सशक्तिकरण 229
6. पेट्रोल एवं डीजल की बढ़ती कीमतें 230
7. कोरोना वायरस—21वीं सदी की महामारी
अथवा
कोरोना महामारी–एक अभिशाप
अथवा
कोरोना वायरस महामारी के सामाजिक–आर्थिक प्रभाव 230
8. मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी उद्योग 231
9. आत्मनिर्भर भारत 232
10. स्वास्थ्य रक्षा : आयुष्मान योजना
अथवा
स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है 233
11. कैशलेस अर्थव्यवस्था : चुनौतीपूर्ण सकारात्मक कदम 233
12. स्वच्छता का महत्त्व 234
13. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग
अथवा
योग की उपादेयता
अथवा
योग : स्वास्थ्य की कुंजी
अथवा
योग भगाएँ रोग 234
14. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 235
15. शिक्षा का अधिकार
अथवा
अनिवार्य बाल–शिक्षा का अधिकार 236
16. रोजगार गारन्टी योजना : मनरेगा
अथवा
मनरेगा : गाँवों में रोजगार योजना

अथवा
गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 237
17. आतंकवाद : वैश्विक क्षितिज पर
अथवा
आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या 237
18. खाद्य पदार्थों में मिलावट और भारतीय समाज
अथवा
मिलावटी माल का बढ़ता कारोबार 238
19. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
अथवा
प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 239
20. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन
अथवा
वाहन–वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 240
21. बालिका शिक्षा 240
22. मानवता के लिए चुनौती-कन्या-भ्रूण-हत्या
अथवा
कन्या-भ्रूण हत्या : लिंगभेद का अपराध 241
23. मेरा प्रिय कवि
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 242
24. सर्व शिक्षा अभियान
अथवा
शिक्षा का प्रसार : उन्नति का द्वार
अथवा
साक्षरता अभियान के बढ़ते कदम 242
25. इन्टरनेट–सूचना क्रान्ति
अथवा
इन्टरनेट : सूचना एवं ज्ञान का भण्डार
अथवा
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट की आवश्यकता 243
26. राजस्थान के पर्यटन स्थल
अथवा
राजस्थान में पर्यटन की संभावनाएँ
अथवा
राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ 244

27. राजस्थान के प्रसिद्ध मेले
अथवा
राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव 245
28. घटती सामाजिकता : बढ़ते संचार साधन
अथवा
संचार क्रांति और समाज 246
29. समाज-निर्माण में नारी की भूमिका
अथवा
समाज में नारी के बढ़ते कदम
अथवा
समाज में नारी का योगदान 246
30. अतिवृष्टि का वह दिन
अथवा
जब गाँव में भीषण वर्षा हुई 247
31. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सैनिक शिक्षा 248
32. आधुनिक सूचना - प्रौद्योगिकी
अथवा
सूचना-क्रांति के युग में भारत 248
33. कम्प्यूटर : अभिशाप या वरदान
अथवा
कम्प्यूटर के चमत्कार 249
34. राष्ट्र के प्रति हमारा नैतिक दायित्व
अथवा
राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व 250
35. मानव के लिए विज्ञान : वरदान या अभिशाप 251
36. वर्तमान की महती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता
अथवा
राष्ट्रीय और भावात्मक एकता
अथवा
राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 251
37. वर्तमान शिक्षा और सदाचार
अथवा
वर्तमान शिक्षा-प्रणाली : गुण और दोष 252
38. विद्यार्थी और वर्तमान राजनीति 253
39. युवा छात्रों में बढ़ता असंतोष 253
40. नये भारत की आशा-युवावर्ग
अथवा
राष्ट्र-निर्माण में युवा पीढ़ी की भूमिका

अथवा
विद्यार्थियों का राष्ट्र-निर्माण में योगदान
अथवा
युवा शक्ति एवं चुनौतियाँ 254
41. भारत में लोकतंत्र-मेरी दृष्टि में
अथवा
भारत में जनतंत्र का भविष्य 255
42. इक्कीसवीं सदी की कल्पनाएँ व सम्भावनाएँ
अथवा
मेरे सपनों का भारत 255
43. विद्यार्थी-जीवन एवं अनुशासन
अथवा
अनुशासन का महत्त्व 256
44. बेरोजगारी की समस्या
अथवा
बेरोजगारी की समस्या : कारण और निराकरण के उपाय 257
45. समाचार-पत्र
अथवा
समाचार-पत्रों का महत्त्व 258
46. दहेज-दानव
अथवा
समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 258
47. महँगाई : समस्या और समाधान
अथवा
बढ़ती महँगाई : घटता जीवन स्तर
अथवा
मूल्यवृद्धि की समस्या
अथवा
बढ़ती महँगाई का जीवन पर प्रभाव 259
48. राजस्थान का अकाल 260
49. भ्रष्टाचार का महादानव
अथवा
भ्रष्टाचार : कारण व निवारण 261
50. राजस्थान के लोकगीत 261
51. बाल-विवाह : सामाजिक अभिशाप 262
52. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप 263
53. जल-संरक्षण : हमारा दायित्व

अथवा

जल है तो जीवन है 263

54. मनोरंजन के आधुनिक साधन 264

55. कम्प्यूटर शिक्षा-आधुनिक समय की आवश्यकता

अथवा

कम्प्यूटर शिक्षा की उपयोगिता 265

56. नदी जल स्वच्छता अभियान 266

57. राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 266

58. पर्यावरण प्रदूषण

अथवा

बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण : एक समस्या 267

59. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक

अथवा

पर्यावरण संरक्षण और युवा 268

60. निरक्षरता : एक अभिशाप 268

61. कटते जंगल : घटता मंगल 269

62. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता

अथवा

नैतिक शिक्षा का महत्त्व 270

2. पत्र एवं प्रारूप लेखन (अर्द्ध शासकीय पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) 271-297

3. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 298-310

4. फीचर लेखन 311-324

5. आलेख 325-334

व्यावहारिक व्याकरण

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 335-341

(2) शब्द-शक्ति 341-349

(3) अलंकार 349-363

(4) पारिभाषिक शब्दावली 363-370

❑❑❑

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

हिन्दी (अनिवार्य)

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
(5) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. **निम्नलिखित बहुचयनात्मक प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए—** [12]

(i) 'अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।' निम्नलिखित में से किस शासन पद्धति को लेखक ने आवश्यक बताया है— [1]
(अ) जीवन को (ब) लोकतंत्र को (स) व्यवहार को (द) परिवार को

(ii) निम्न में से किस पेड़ के फल इतने मजबूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते हैं? [1]
(अ) शिरीष (ब) अशोक (स) अरिष्ट (द) पुन्नाग

(iii) 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के लेखक हैं— [1]
(अ) कबीर (ब) फणीश्वर नाथ रेणु (स) धर्मवीर भारती (द) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(iv) 'खेत में पैदा होने वाला अन्न कुछ समय पश्चात् समाप्त हो जाता है, किन्तु निम्नलिखित में से जो रस कवि के अनुसार कभी चुकता नहीं, है'— [1]
(अ) भोज्य रस (ब) अनुभव रस (स) साहित्य रस (द) ओज रस

(v) किस शायर की भाषा और प्रसंग सूरदास के वात्सल्य वर्णन की सादगी को याद दिलाते हैं? [1]
(अ) फ़िराक गोरखपुरी (ब) दुष्यन्त कुमार (स) शमशेर बहादुर सिंह (द) कुँवर नारायण

(vi) कवि गोस्वामी तुलसीदास के हृदय में निम्नलिखित में से किस समय करुण रस के बीच वीर रस के उदय के रूप की अनुभूति प्रदर्शित होती है? [1]
(अ) राम का वनवास जाना। (ब) कुंभकरण का बिलख पड़ना।
(स) जगदम्बा की लीला दिखना। (द) हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना।

(vii) निम्नलिखित में से भाषा का सीमित, अविकसित तथा आम बोलचाल वाला रूप कहलाता है— [1]
(अ) भाषा (ब) लिखित भाषा (स) बोली (द) खड़ी बोली

(viii) 'Vigilance' शब्द का सही अर्थ है— [1]
(अ) संयुक्त (ब) शपथ (स) संविभाग (द) सतर्कता

(ix) मुद्रित माध्यमों में सबसे बड़ी शक्ति यह है कि छपे हुए शब्दों में निम्नलिखित गुण होता है— [1]
(अ) स्फूर्तता (ब) असुरक्षा (स) स्थायित्व (द) बाध्यता

(x) रेडियो पत्रकारों को निम्नलिखित में से किसका पूरा ध्यान रखना होता है? [1]
(अ) अपने पाठकों का (ब) अपने श्रोताओं का (स) अपने दर्शकों का (द) अपनी शुरुआत का

(xi) निम्नलिखित में से जो आत्मकथात्मक उपन्यास गाथा निश्चय ही किशोर होते विद्यार्थियों के लिए हम-कदम बन सकती है— [1]
(अ) जुलूस (ब) सिल्वर वैडिंग (स) अतीत में दबे पाँव (द) जूझ

(xii) निम्नलिखित में से 'दबे स्वर में किसने पूछा', "मेहमान गए?" [1]

(अ) बीवी बच्चों ने (ब) यशोधर बाबू की पत्नी ने

(स) यशोधर बाबू ने (द) रिश्तेदार ने

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए— [6]

(i) मौखिक भाषा को लिखित रूप के लिए लेखन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है उसे .... कहते हैं। [1]

(ii) 'दक्षता' के लिए सही अंग्रेजी शब्द .... है। [1]

(iii) 'नक्षत्र' हवा से बातें कर रहा है। वाक्य में .... शब्द शक्ति है। [1]

(iv) जब शब्दार्थ की व्यंजना अर्थ पर निर्भर होती है, उसका पर्याय रख देने पर भी अभीष्ट की पूर्ति हो जाती है, वहाँ .... शब्द शक्ति होती है। [1]

(v) जहाँ वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो, वहाँ .... अलंकार होता है। [1]

(vi) 'भगवान भागें दु:ख जनता देश की फूले-फले।' इस पंक्ति में निहित .... अलंकार है। [1]

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए सभी प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए— [6]

व्यक्ति को अपने जीवन में नाना प्रकार के लक्ष्य निर्धारित करने की अपेक्षा किसी एक उत्तम लक्ष्य को ही निश्चित करना चाहिए। जो व्यक्ति कई उद्देश्यों की पूर्ति का ख्वाब छोड़कर अर्जुन की तरह एक ही लक्ष्य को चिड़िया की आँख मानकर उस पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित करता है, निश्चय ही सफलता उसके चरणों को चूमती है। एक ही साथ दो घोड़ों पर सवार होने वाले का फिसलकर नीचे गिरना निश्चित है। किसी पेड़ के तने, डालियों, पत्तों, फूलों की अलग-अलग सेवा करने वाले को फलों से वंचित ही रहना पड़ेगा जबकि वह यदि मूल (जड़) को ही सींचे तो उसे फल की प्राप्ति होनी ही है। अत: व्यक्ति को एक ही उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना चाहिए।

(i) व्यक्ति को अपने जीवन में सफल होने के लिए क्या निश्चित करना चाहिए? [1]

(ii) 'नयन' शब्द का पर्यायवाची शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। [1]

(iii) फल की प्राप्ति किसको सींचने से होती है? [1]

(iv) इस गद्यांश से छाँटकर 'उपेक्षा' शब्द का विपरीतार्थ लिखिए। [1]

(v) 'चिड़िया की आँख' में निहित प्रतीकात्मक अर्थ को लिखिए। [1]

(vi) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए। [1]

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सभी प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए— [6]

अपने नहीं अभाव मिटा पाया जीवन भर,
पर औरों के सभी अभाव मिटा सकता हूँ।
तूफानों-भूचालों की भयप्रद छाया में,
मैं ही एक अकेला हूँ जो गा सकता हूँ।
मेरे 'मैं' की संज्ञा भी इतनी व्यापक है,
इसमें मुझसे अगणित प्राणी आ जाते हैं।
मुझको अपने पर अदम्य विश्वास रहा है।
मैं खण्डहर को फिर से महल बना सकता हूँ।
जब-जब भी मैंने खण्डहर आबाद किए हैं,
प्रलय-मेघ भूचाल देख मुझको शरमाए।
मैं मजदूर मुझे देवों की बस्ती से क्या
अगणित बार धरा पर मैंने स्वर्ग बनाए।

(i) कवि ने किसके अभाव मिटाने की बात कही है? [1]

(ii) जीवन में कवि ने खण्डहर से महल बनाने हेतु किसकी आवश्यकता पर बल दिया है? [1]

(iii) अदम्य व्यक्ति को देखकर कौन-कौन शर्माते हैं? [1]
(iv) जीवन में सुधार हेतु किसका महत्त्व अधिक बताया है? [1]
(v) कवि ने अपने आप को क्या मानकर धरती पर स्वर्ग बनाने की बात कही है? [1]
(vi) 'बादल' का पर्याय पद्यांश से छाँटकर लिखिए। [1]

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए–

5. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं, प्रकार लिखते हुए उनकी परिभाषा दीजिए। [2]
6. लेखक ने महामारी की रात्रि में विभीषिका को ललकार कर चुनौती देने वाली शक्ति को ढोलक के माध्यम से किस प्रकार वर्णित किया है? [2]
7. 'बादल राग' कविता में क्रान्ति आकांक्षी वंचितों के प्रतिनिधित्व की अनुगूँज को स्पष्ट कीजिए। [2]
8. सिन्धु सभ्यता में आकार की भव्यता के स्थान पर कला की भव्यता दिखाई देती है। पाठ के आधार पर लिखिए। [2]
9. 'जूझ' कहानी के लेखक के अनुसार दादा के जीवन शैली की दिनचर्या के बारे में लिखिए। [2]

खण्ड-स

प्रश्न संख्या 10 से 13 के उत्तर 60 से 80 शब्दों में लिखिए एवं 14 व 15 के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए–

10. 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो'। 'उषा' कविता के आधार पर इस पंक्ति को स्पष्ट कीजिए। [3]

अथवा

'किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील हो जाते हैं।' इस कथन में प्रकट वर्तमान युग की विडंबना को कविता के सन्दर्भ में समझाइये।

11. ''हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इन्द्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?'' लेखक के इस कथन के आधार पर हमारे सांस्कृतिक विश्वास के समर्थन में अपने विचार स्पष्ट कीजिए। [3]

अथवा

'माल बिछा रहता है, और उसका मन अडिग रहता है।' इस कथन के आधार पर लेखक के बाज़ारवाद की भावना को लिखिए।

12. ''मिक्चर मत पिलाइए गुरुदेव। चाय-मट्ठी-लड्डू बस इतना ही सौदा है।'' इस कथन के आधार पर कहानी के पात्र यशोधर बाबू की भीतरी मन की सहानुभूति के सम्बन्ध में नई पीढ़ी के संदेश को लिखिए। [3]

अथवा

'भैंस चराते-चराते मैं फ़सलों पर, जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा।' कविता रच लेने के आत्मविश्वास को लेखक की धारणा के आधार पर लिखिए।

13. ''मुअनजो-दड़ो ताम्र काल के शहरों में सबसे बड़ा है।'' इस कथन में सभ्यता और संस्कृति में वर्तमान धड़कती जिन्दगियों के प्रति पुरातात्विक जानकारी को पाठ के आधार पर लिखिए। [3]

अथवा

'आधुनिक किस्म के अजनबी लोगों की भीड़ को देखकर यशोधर बाबू अँधेरे में ही दुबके रहे।' वर्तमान में आए परिवर्तन से हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्यों की मूल संवेदना कहानी के आधार पर लिखिए।

14. 'संपादकीय लेखन' में दायित्व किस पर निर्भर होता है? कोई एक उदाहरण लिखिए। [3]

अथवा

विशेष लेखन के क्षेत्र खेलों के बारे में पत्र-पत्रिका में लिखने वालों को किन-किन बातों की जानकारी होनी चाहिए, विस्तारपूर्वक समझाइए।

15. 'आलोक धन्वा' का कवि परिचय लिखिए। [4]

अथवा

फणीश्वर नाथ रेणु का लेखक परिचय लिखिए।

खण्ड-द

16. **निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–** [6]

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दु:ख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!
मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

अथवा

ऊपर से ठीक ठाक
पर अन्दर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत!
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी
मुझे पसीना पोंछते देख कर पूछा–
"क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?"

17. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या लिखिए—** [6]

यह मैंने भक्तिन के प्रस्ताव को अवकाश न देने के लिए कहा था; पर उसके परिणाम ने मुझे विस्मित कर दिया। भक्तिन ने परम रहस्य का उद्घाटन करने की मुद्रा बनाकर और पोपला मुँह मेरे कान के पास लाकर हौले-हौले बताया कि उसके पास पाँच बीसी और पाँच रुपया गड़ा रखा है। उसी से वह सब प्रबंध कर लेगी। फिर लड़ाई तो कुछ अमरौती खाकर आई नहीं है। जब सब ठीक हो जाएगा, तब यहीं लौट आएँगे। भक्तिन की कंजूसी के प्राण पूंजीभूत होते-होते पर्वताकार बन चुके थे; परन्तु इस उदारता के डाइनामाइट ने क्षण भर में उन्हें उड़ा दिया।

अथवा

पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानीवाले बादलों की फसल आ जायेगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है।

18. कर्मचारी चयन बोर्ड, दिल्ली में विभिन्न पदों पर आवेदन आमंत्रित करने हेतु समाचार-पत्र में प्रकाशनार्थ निर्धारित प्रारूप में एक विज्ञप्ति लिखिए। [4]

अथवा

अबस विद्यालय रामपुर में स्काउटिंग प्रवृत्ति विकसित करने हेतु आवश्यक सामग्री क्रय करने हेतु 'निविदा' लिखिए।

19. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबन्ध लिखिए। (शब्द सीमा 300 शब्द) [5]

(1) मेक इन इंडिया अभियान
(2) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
(3) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की महत्ता
(4) पर्वतीय क्षेत्र की मेरी यात्रा

अनिवार्य हिन्दी कक्षा 12

आरोह भाग-2

काव्य–खण्ड

1. हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय–आधुनिक हिन्दी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक डॉ. हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म सन् 1907 ई. को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता का नाम प्रतापनारायण और माता का नाम सरस्वती देवी था। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे, फिर आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से सम्बद्ध तथा विदेश मन्त्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे। सन् 1966 में राज्यसभा के लिए राष्ट्रपति द्वारा नामित हुए। इसी वर्ष इन्हें 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' मिला। सन् 1969 में 'दो चट्टानें' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। सन् 1976 में इन्हें 'पद्मभूषण' तथा सन् 1992 में 'सरस्वती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। जनवरी सन् 2003 में मुम्बई में इनका निधन हुआ।

कवि हरिवंश राय बच्चन का कृतित्व अतीव महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इनकी प्रमुख रचनाओं के नाम हैं— मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा-निमन्त्रण, आकुल-अन्तर, एकान्त संगीत, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नये-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ (काव्य-संग्रह); क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक (आत्मकथा चार खण्ड) तथा प्रवास की डायरी आदि। बच्चनजी के समस्त वाङ्मय को 'बच्चन ग्रन्थावली' नाम से दस खण्डों में प्रकाशित किया गया है।

कविता-परिचय–प्रस्तुत पाठ में हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित 'आत्म-परिचय' कविता 'निशा-निमन्त्रण' काव्य-संग्रह का एक गीत संकलित है। इस गीत में यह प्रतिपादित किया गया है कि अपने को जानना दुनिया को जानने से भी अधिक कठिन है। समाज से व्यक्ति का सम्बन्ध खट्टा-मीठा तो होता ही है, जग-जीवन से पूरी तरह निरपेक्ष रहना सम्भव नहीं है। व्यक्ति को चाहे दूसरों के आक्षेप कष्टकारी लगें, परन्तु अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। सांसारिक द्विधात्मक सम्बन्धों के रहते हुए भी व्यक्ति जीवन में सामंजस्य स्थापित कर सकता है। पाठ में संकलित 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' गीत में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने जीवन के अकेलेपन की कुण्ठा अभिव्यक्त की है। यात्रा-पथ पर चलता हुआ पथिक 'अब मंजिल पास ही है' ऐसा सोचकर अधिक तेजी से चलने लगता है। वह सोचता है कि घर पर लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे, इससे उसके कदमों की गति बढ़ जाती है। लेकिन जब कवि का जीवन एकाकी हो, तो वह किसके लिए ऐसी उत्कण्ठा रखेगा? कवि ने इसमें अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद के कुण्ठामय जीवन का चित्रण करते हुए यह सन्देश दिया है कि जीवन में लक्ष्य-प्राप्ति हेतु संघर्ष करने से उत्साह बढ़ता है, परन्तु प्रेम के अभाव में निराशा और दुर्बलता आती है।

कठिन शब्दार्थ एवं सप्रसंग व्याख्याएँ

1. आत्म-परिचय

(1)

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ–झंकृत = झनझनाकर बजना। **तार** = तारों का बाजा वीणा आदि। **स्नेह-सुरा** = प्रेम रूपी शराब।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने अपनी जीवन-शैली का परिचय दिया है कि वह किस प्रकार विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन में स्नेह-भार लिये घूमते हैं।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं इस सांसारिक जीवन का भार अपने ऊपर लिये हुए फिरता रहता हूँ। किसी प्रिय ने मेरे हृदय की कोमल भावनाओं का स्पर्श करके (हृदय रूपी वीणा के तारों से) इसे झंकृत कर दिया है। इस तरह मैं अपनी साँसों के दो तार लिये हुए जग-जीवन में फिरता रहता हूँ।

कवि बच्चन कहते हैं कि मैं प्रेमरूपी शराब को पीकर मस्त रहता हूँ। इसी मस्ती में इस बात का विचार कभी नहीं करता हूँ कि लोग मेरे सम्बन्ध में क्या कहते हैं। मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता हूँ। यह संसार तो उन्हें पूछता है, अर्थात् प्रशंसा करता है जो उनके कहने पर चलते हैं, उनके अनुसार गाते हैं। किन्तु मैं अपने मन की भावनाओं के अनुसार गाता हूँ तथा कविता में अपने ही मनोभावों को अभिव्यक्ति देता हूँ।

विशेष–(1) कवि ने इसमें अपने जीवन के सुख-दुःख व प्रेम के दायित्व का भार स्वयं उठाये चलने को कहते हैं। साथ ही स्वयं के मनानुसार चलने की बात कहते हैं।

(2) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है। रूपक व अनुप्रास अलंकारों की सहज अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद गुण का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली का प्रयोग है।

(2)

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ!

कठिन-शब्दार्थ–निज = अपना। उर = हृदय। **उद्गार** = हृदय के भाव। **भव-मौजों** = संसार की लहरों, तटों।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंशराय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्मपरिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि ने स्वयं के जीवन-शैली तथा संसार के व्यवहार का परिचय दिया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि मैं अपने हृदय में नये-नये भाव रखता हूँ। मैं अपने ही हृदय द्वारा दिये गए उपहारों (सुख-दुःख) को लिये घूमता रहता हूँ। मैं उन्हीं मनोभावों को लेकर उड़ता-घुमड़ता रहता हूँ। मैं किसी अन्य के इशारे पर नहीं चलता, मैं अपने हृदय की भावना को ही श्रेष्ठ भेंट मानकर अपनाता रहता हूँ। मुझे यह सारा संसार अधूरा लगता है, इसमें प्रेम का अभाव-सा है। यह इसी कारण मुझे अच्छा नहीं लगता है। मेरे मन में प्रेममय सुन्दर सपनों का संसार है और उसी को लेकर मैं आगे बढ़ता रहता हूँ, अर्थात् मैं अपनी भावनाओं के अनुसार प्रेममय संसार की रचना करता रहता हूँ।

कवि कहता है कि मेरे हृदय में प्रेम की अग्नि जलती रहती है और मैं उसी की आँच से स्वयं तपा करता हूँ। कवि कहता है कि मैं प्रेम-दीवानगी में मस्त होकर जीवन में सुख-दुःख दोनों दशाओं में मग्न रहता हूँ। यह संसार विपदाओं का सागर है, मैं इसे प्रेमरूपी नाव से पार करना चाहता हूँ। इसलिए मैं भव-सागर की लहरों पर प्रेम की उमंग और मस्ती के साथ बहता रहता हूँ। इस तरह मैं प्रसन्नतापूर्वक जीवन-नाव से संसार-सागर के किनारे लग जाता हूँ। सभी परिस्थितियों में मैं मस्त रहता हूँ।

विशेष–(1) कवि संसार की रीतियों से अलग स्वयं के सुख-दुःख एवं का प्रेम में मग्न रहने का भाव प्रकट करते हैं। उनका कवित्व संसार ही उनका जीवन है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है। भव-सागर में रूपक अलंकार का प्रयोग है। कोमलकान्त शब्दावली एवं प्रसाद गुण का प्रयोग हुआ है। तुकान्त व गेयता प्रमुख गुण है।

(3)

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना!

कठिन-शब्दार्थ–उन्माद = पागलपन, प्रेम की अत्यधिक सनक। **अवसाद** = दु:ख से उत्पन्न उदासी, विषाद। **मूढ़** = मूर्ख।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित काव्य-संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। जिसमें कवि अपने हृदय की अवस्थाएँ एवं संसार के व्यवहार पर अपनी भावनाएँ प्रकट कर रहे हैं कि कवि के हृदय के सत्य को किसी ने भी जानने की कोशिश नहीं की।

व्याख्या–कवि हरिवंश राय 'बच्चन' अपने सम्बन्ध में कहते हैं कि मैं युवावस्था के नशे में रहता हूँ, मेरे ऊपर प्रेम का पागलपन सवार रहता है। इस दीवानगी में मुझे कदम-कदम पर निराशा भी मिलती रहती है, अर्थात् दु:ख-विषाद की भावना भी इसमें विद्यमान रहती है। इससे मेरी मन:स्थिति बाहर से तो हँसते हुए अर्थात् प्रसन्नचित्त रहती है, परन्तु अन्दर-ही-अन्दर रुलाती रहती है। इस स्थिति का मूल कारण यह है कि मैं अपने हृदय में किसी प्रिय की मधुर स्मृति बसाए हुए हूँ और हर समय उसकी याद करता रहता हूँ और उसके न मिलने से दु:खी हो जाता हूँ।

कवि कहता है कि मैंने सारे उपाय, सारे प्रयत्न करके देख लिये लेकिन किसी ने भी मेरे हृदय के सत्य को जानने की कोशिश नहीं की। कोई भी मेरे इस जीवन-सत्य को कोई नहीं जान पाया। इस तरह जिसे भी देखो वही नादानी कर रहा है। इस संसार में जिसे जहाँ पर भी धन, वैभव और भोग-सामग्री मिल जाती है, वह वहीं पर दाना चुगने लगता है, अर्थात् स्वार्थ पूरा करने लगता है। परन्तु कवि की दृष्टि में ऐसे लोग मूर्ख होते हैं, क्योंकि वे जान-बूझकर सांसारिक लाभ-मोह के चक्कर में उलझे रहते हैं। मैं संसार की इस नासमझी को समझ गया हूँ। इसीलिए मैं सांसारिकता का पाठ सीख रहा हूँ और सीखे हुए ज्ञान को अर्थात् पुरानी बातों को भूलकर अपने मन के अनुसार चलना सीख रहा हूँ।

विशेष–(1) कवि ने अपने हृदय के दु:खों को तथा संसार के मूढ़ व्यक्तियों की विचित्र दशा को बताया है।

(2) कोमलकान्त शब्दावली, तत्सम भाषा का प्रयोग तथा अनुप्रास अलंकार की प्रस्तुति द्रष्टव्य है।

(3) तत्सम प्रधान खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है।

(4)

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

कठिन-शब्दार्थ–वैभव = धन-दौलत। **पग** = कदम।

प्रसंग–प्रस्तुत काव्यांश कवि हरिवंश राय बच्चन द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'निशा-निमंत्रण' की कविता 'आत्म-परिचय' से लिया गया है। इसमें कवि ने संसार एवं अपने हृदय के सम्बन्ध तथा संसार की निष्ठुरता को व्यक्त किया है।

व्याख्या–कवि अपने और संसार की क्रियाओं के विषय में कहते हैं कि मैं एक कवि जो कि स्वभाव से ही संवेदनशील होता है और कहाँ ये संसार? हम दोनों के मध्य किस प्रकार का रिश्ता? संसार अपनी निष्ठुरता के लिए जाना जाता है और मैं अपने प्रेममय हृदय के लिए। इसलिए न जाने मैं अपनी कल्पनाओं में अपनी भावनाओं के अनुरूप, कितने ही संसार रोज बनाता-मिटाता हूँ। मेरा संसार से कोई नाता या सम्बन्ध नहीं है। मेरा तो इस संसार के साथ टकराव-अलगाव चलता रहता है। मैं रोज एक नये संसार की अर्थात् नये आदर्श की रचना करता हूँ और उससे पूरी तरह सन्तुष्ट

अपठित बोध

निर्देश–

(1) परीक्षा में अपठित गद्यांश और पद्यांश के अवतरण दिये जाते हैं।
(2) अपठित गद्यांश या पद्यांश को सावधानी से दो बार पढ़कर उसका केन्द्रीय भाव अर्थग्रहण करना चाहिए।
(3) यदि कोई रेखांकित अंश हो, तो उसका अर्थ एवं मूल भाव सावधानीपूर्वक समझना चाहिए।
(4) अपठित का यदि शीर्षक देना हो, उसका चुनाव केन्द्रीय भाव के अनुसार संक्षिप्त (शब्द सीमा 1-5 शब्द) व सारगर्भित करना चाहिये।
(5) अपठित से सम्बन्धित प्रश्न विषय-वस्तु, भावाभिव्यक्ति एवं रचनान्तरण आदि से सम्बन्धित होते हैं।
(6) इसमें पूर्व कक्षा पठित व्याकरण आधारित प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं अत: पूर्व पठित का प्रत्यास्मरण करना चाहिए।

1. अपठित काव्यांश

निम्नलिखित अपठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए :

(1)

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन भारतवर्ष है।।
हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।
विधि ने किया नर-सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है॥ **[माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2023 (सं.)]**

प्रश्न–(अ) कवि ने 'भू-लोक का गौरव' किसे बताया है?
(ब) 'नर-सृष्टि' का सर्वप्रथम विस्तार किसने किया है?
(स) 'नूतन' शब्द का पद्यांश में विलोम शब्द क्या प्रयुक्त हुआ है?
(द) भारत की श्रेष्ठता किससे परिलक्षित होती है?
(य) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
(र) 'वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।' इस पंक्ति का आशय क्या है?

उत्तर–(अ) कवि ने इस पद्यांश में हमारे भारतवर्ष को इस धरती लोक अर्थात् विश्व का गौरव बताया है।
(ब) इस भूलोक (धरती) पर नर-सृष्टि (मानव सृष्टि) का सर्वप्रथम विधि अर्थात् विधाता ने विस्तार किया है।
(स) इस पद्यांश में 'नूतन' शब्द का विलोम शब्द 'पुरातन' प्रयुक्त हुआ है।
(द) भारत की श्रेष्ठता ऋषि भूमि से एवं भगवान की भवभूतियों के भण्डार से परिलक्षित होती है।
(य) उपर्युक्त पद्यांश के उपयुक्त शीर्षक निम्न हो सकते हैं—'भारत की श्रेष्ठता' या 'भारतवर्ष की महिमा' या 'विश्व सिरमौर भारत' या 'पुरातन देश भारत'।
(र) हमारे देश की भारतभूमि संसार के सम्पूर्ण देशों में सर्वश्रेष्ठतम है।

(2)

कातरता, चुप्पी या चीखें
या हारे हुओं की खोज
जहाँ भी मिलेगी

उन्हें प्यार से सितार पर बजाऊँगा।
जीवन ने कई बार उकसाकर
मुझे अनलंघ्य सागरों में फेंका है
अगन-भट्टियों में झोंका है
मैंने वहाँ भी
ज्योति की मशाल प्राप्त करने के यत्न किये
बचने के नहीं
तो क्या इन टटकी बन्दूकों से डर जाऊँगा?
तुम मुझको दोषी ठहराओ
मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोंटा है।
पर मैं गाऊँगा
चाहे इस प्रार्थना सभा में
तुम सब मुझ पर गोलियाँ चलाओ
मैं मर जाऊँगा
लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा
कल फिर आऊँगा। **[माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2022-23 (सं.)]**

प्रश्न–(अ) उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने किस महापुरुष के भावों का उल्लेख किया है?
(ब) 'मैं मर जाऊँगा, लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा, कल फिर आऊँगा' उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
(स) 'सुनसान का गला घोंटा।' पंक्ति का तात्पर्य बताइये।
(द) उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने किस शैली का प्रयोग किया है?
(य) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
(र) 'लंघ्य' शब्द का विपरीतार्थक शब्द पद्यांश में क्या प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर–(अ) उपर्युक्त पद्यांश में कवि ने हमारे महापुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विचारों का उल्लेख किया है।
(ब) उक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि देश सेवा के लिए समर्पित लोग इस संसार में बार-बार जन्म लेते हैं और मरते हैं। वे मरकर भी अमर रहते हैं।
(स) पंक्ति का आशय यह है कि सुनसान रूपी व्यक्ति की गर्दन दबा दी अर्थात् सूने मानव मन में आशा की किरणों को जलाने की बजाय निराशा की भावना भर दी।
(द) कवि ने इस कवितांश या पद्यांश में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है।
(य) उपर्युक्त पद्यांश के उपयुक्त शीर्षक निम्न हो सकते हैं—'शान्ति के अग्रदूत' या 'शान्ति के अग्रदूत महात्मा गाँधी' या 'मानवता के मसीहा महात्मा गाँधी'।
(र) पद्यांश में 'अनलंघ्य' शब्द 'लंघ्य' शब्द के विपरीतार्थक शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

(3)

रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिलाते थे।
बड़े-बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे॥
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़-पोंछ कर चूम-चूम कर गीले बालों को सुखा दिया॥
दादा ने चंदा दिखलाया नैन नीर-युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देखकर सबके चेहरे चमक उठे॥
वह सुख का साम्राज्य छोड़कर मैं मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई कुछ ठगी हुई-सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई॥ **[माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2022 (सं.)]**

प्रश्न–(अ) "रोना और मचल जाना" क्या दिलाते थे?
(ब) जयमाला किसकी बनी होती थी?

(स) सबके चेहरे क्यों चमक उठे?
(द) इस पद्यांश का शीर्षक क्या हो सकता है?
(य) दादा ने कवयित्री को क्या दिखलाया?
(र) 'नैन नीर-युत' का क्या अर्थ है?

उत्तर–(अ) कवयित्री को रोना और मचल जाना बचपन में भोगे गये आनन्द की याद दिलाते थे।
(ब) जब कवयित्री बचपन में रोती रहती थी तब मोती रूपी आँसू लगातार निकलते जो जयमाला के रूप में सुशोभित होते थे।
(स) जब दादाजी ने कवयित्री को मनाते हुए चाँद दिखाया तो वह मुस्कराने लगी तो सबके चेहरों पर चमक आ गयी।
(द) इस पद्यांश के उचित शीर्षक निम्न हो सकते हैं—'बचपन' या 'बचपन की मधु स्मृति' या 'बाल्यकाल की यादें'।
(य) दादा ने कवयित्री को रोता-मचलता देख चन्दा दिखाकर उसमें मुस्कान भरी।
(र) 'नैन नीर-युत शब्द का आशय है, आँसुओं से भरी हुई आँखें अर्थात् खुशी के आँसू।

(4)

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–

यह अंतिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा ना हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वहाँ रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गए नयनद्वय
धिक् जीवन को जो पाता ही आया है विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन
''यह है उपाय'' कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन
''कहती थीं माता, मुझको सदा राजीव नयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुनश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।'' [माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर, 2021-22 (सं.)]

प्रश्न–(अ) राम की माता उन्हें क्या कहती थीं?
(ब) राम की शक्तिपूजा में कमल पुष्प कौन चुरा लेता है?
(स) राम ने किसको पराजित करने के लिए शक्ति की उपासना की?
(द) 'दो नील कमल हैं शेष अभी' राम किन नीलकमलों की बात कर रहे हैं?
(य) 'नीलकमल' शब्द में कौनसा अलंकार है?
(र) 'नयन' शब्द के तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर–(अ) बाल्यकाल में माता कोशल्या हमेशा श्रीराम के नेत्र कमल के समान होने के कारण उन्हें राजीव नयन कहकर पुकारती थी।
(ब) राम युद्ध में विजयश्री प्राप्त करने के लिए 'महाशक्ति' की आराधना कर रहे थे। 'महाशक्ति' राम की परीक्षा लेने हेतु पूजार्थ रखे हुए कमल पुष्प को चुरा लेती है।

रचनात्मक लेखन

1. निबन्ध-लेखन

'**निबन्ध**' गद्य-साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। उपन्यास, कहानी, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा-वृत्त आदि गद्य के विविध रूपों में निबन्ध को ही सर्वश्रेष्ठ और कलापूर्ण माना जाता है। आचार्य रामचन्द्र के शब्दों में, ''निबन्ध गद्य की कसौटी है।'' संस्कृत में भी सूक्त-कथन है, 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।' निबन्ध-रचना में गद्य का उत्कृष्ट रूप व्यक्त होता है तथा यह भावों एवं विचारों की सुस्पष्ट अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।

परिभाषा–'निबन्ध' का शाब्दिक अर्थ है–निश्चित बन्ध। 'बन्ध' से अभिप्राय विचारों एवं भावों के गुम्फन से है। बाबू गुलाबराय ने निबन्ध का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''निबन्ध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव, सजीवता तथा आवश्यक संगति एवं सम्बद्धता के साथ किया गया हो।''

अंग्रेजी में निबन्ध को 'एस्से' कहते हैं, जिसका अर्थ है–प्रयत्न। इस तरह प्रयत्नपूर्वक लिखी जाने वाली गद्य-रचना 'एस्से' कहलाती है।

निबन्ध-रचना के तत्त्व–निबन्ध-रचना के प्रमुख तीन तत्त्व माने जाते हैं–(1) भाषा, जो व्याकरण-सम्मत, परिष्कृत और शुद्ध हो तथा जिसमें पाठकों को प्रभावित करने की अथवा विचारों को अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता हो। (2) शैली, जो साहित्यिक गुणों से सम्पन्न और निबन्धकार के निजीपन को प्रकट करती हो। शैली के अनेक भेद होते हैं, परन्तु उनमें सरसता, रोचकता और आकर्षण का होना आवश्यक है। (3) भाव एवं विचार, जो कि अनुभूति और चिन्तन के प्रतिरूप होते हैं। भावों और विचारों की अभिव्यक्ति क्रमबद्ध, प्रभावोत्पादक, गम्भीर तथा विषयानुरूप होनी चाहिए।

निबन्ध में शैलियाँ–निबन्ध-रचना में शैली का विशेष महत्त्व है। शैली ही निबन्धकार के व्यक्तित्व और निजीपन को प्रकट करती है। शैली अपनी बात कहने की पद्धति होती है। विषय-प्रतिपादन के अनुरूप शैलियाँ कई प्रकार की होती हैं, उनमें प्रमुख इस प्रकार हैं–

(1) समास शैली–भाषा के गुण के आधार पर इस शैली में कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति की जाती है।

(2) व्यास शैली–किसी बात को विस्तार से बताने के लिए व्यास शैली अपनायी जाती है, इसे व्याख्यात्मक शैली भी मानते हैं।

(3) धारा शैली–विचारों एवं भावों को प्रखर अभिव्यक्ति के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है। भावात्मक निबन्ध इसी शैली में लिखे जाते हैं।

(4) आवेग एवं प्रलाप शैली–भावों एवं विचारों के आवेग में शीघ्रता से सभी तरह से प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति करने के लिए इस शैली का प्रयोग किया जाता है।

(5) व्यंजनात्मक शैली–इसमें हास्य-व्यंग्य के साथ विनोद का भी पुट रहता है और पर्याप्त सरसता व प्रखरता भी रहती है।

(6) अन्य शैलियाँ–उक्त निबन्ध-शैलियों के अतिरिक्त जो अन्य शैलियाँ प्रयुक्त होती हैं, वे हैं–आगमन शैली, निगमन शैली, सूत्र शैली, प्रसाद शैली, आलंकारिक शैली, सरस शैली, मुहावरा शैली आदि।

निबन्ध के भेद–

स्थूल रूप से निबन्धों की दो कोटियाँ मानी जाती हैं–व्यक्ति-प्रधान तथा विषय-प्रधान। इनके साथ ही निबन्धों के कई प्रकार माने जाते हैं, जैसे–सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक, दार्शनिक, ललित आदि। परन्तु रचना की दृष्टि से निबन्ध के पाँच प्रकार माने जाते हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. वर्णनात्मक निबन्ध–प्राकृतिक दृश्य, उत्सव, मेला, तीर्थ, नगर, ऋतु आदि के वर्णन से सम्बन्धित निबन्ध इस वर्ग में आते हैं।

2. विवरणात्मक निबन्ध–युद्धों, यात्राओं, जीवनियों, साहसपूर्ण कार्यों तथा ऐतिहासिक घटनाओं पर लिखे गये निबन्ध इस वर्ग में आते हैं।

3. विचारात्मक निबन्ध–बुद्धि-तत्त्व की प्रधानता वाले, विचारात्मक, चिन्तन की प्रमुखता वाले मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक निबन्ध इस श्रेणी में आते हैं।

4. भावात्मक निबन्ध–राग-तत्त्व अर्थात् भावात्मकता की प्रधानता वाले, गहन अनुभूति एवं तीव्र भावाभिव्यक्ति वाले तथा ललित एवं व्यक्तित्वपरक निबन्ध इस श्रेणी में आते हैं।

5. संस्मरणात्मक निबन्ध–यात्रा-वृत्त, रिपोर्ताज, संस्मरण, रेखाचित्र अथवा डायरी आदि शैली में लिखे गये निबन्ध इस कोटि में आते हैं।

6. ललित निबन्ध–कुछ निबन्ध भाषा-शैली, वाक्य-रचना, अलंकार, मुहावरे इत्यादि के प्रयोग द्वारा इस तरह लिखे जाते हैं कि इनकी पठनीयता एवं प्रभावोत्पादकता ही नहीं, बल्कि भाषा-सौन्दर्य भी पाठक को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त होते हैं, ऐसे निबन्ध को ललित निबन्ध कहा जाता है।

निबन्ध-लेखन के प्रमुख अंग–निबन्ध-लेखन के लिए सतत् अभ्यास की जरूरत होती है। इसके लिए निम्नलिखित तीन अंगों का ध्यान रखना पड़ता है–

(क) प्रस्तावना या भूमिका–इसमें निबन्ध की विषयवस्तु का परिचय दिया जाता है, जिससे पाठक को निबन्ध के अगले भागों को समझने में आसानी होती है। जैसे–विषय की परिभाषा, उसकी महत्ता, उससे सम्बन्धित सूक्त कथन, उद्धरण, विवरण आदि का सरस और प्रभावोत्पादक उपस्थापन होना चाहिए।

(ख) मध्य या प्रसार–मध्य भाग में विषय का बिन्दुवार विवेचन और उससे सम्बन्धित अपनी मान्यताओं का समावेश करना चाहिए। इसी भाग से निबन्ध-लेखक की योग्यता, कल्पना-शक्ति एवं विचार-क्षमता का पता चलता है।

(ग) अन्त या उपसंहार–इसमें निबन्ध का सार या निष्कर्षात्मक निचोड़ आ जाना चाहिए। इसमें अपनी मौलिक मान्यताओं, उपलब्धियों तथा सम्भावनाओं का समावेश किया जाना चाहिए।

निबन्ध-लेखन में ध्यान देने योग्य बिन्दु

छात्रों को निबन्ध लिखते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) सर्वप्रथम निबन्ध के शीर्षक (विषय) पर विचार कर उससे सम्बन्धित सामग्री का संकलन करना चाहिए। इसके लिए उचित सूक्त-कथनों, लोकोक्तियों और मुहावरों आदि पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(2) निबन्ध-लेखन से पूर्व उसकी संक्षिप्त रूपरेखा बतानी चाहिए। उस रूपरेखा में प्रस्तावना, मध्य एवं उपसंहार में दिये जाने वाले विचारों को शीर्षकों में क्रमबद्ध रखना चाहिए।

(3) निबन्ध लिखते समय संकेत-बिन्दुओं के संक्षिप्त शीर्षक देकर उनके अनुसार अनुच्छेदों और उपशीर्षकों का विभाजन करना चाहिए।

(4) अच्छे विचारों की पुष्टि के लिए कवियों के सुभाषित एवं विद्वानों की सम्मतियाँ उद्धरण रूप में देनी चाहिए, परन्तु उद्धरण अधिक लम्बे नहीं होने चाहिए।

(5) निबन्ध की भाषा सुगठित, शुद्ध, सरल, सरस और विषय के अनुकूल होनी चाहिए। विषय-प्रतिपादन के लिए उचित शैली अपनानी चाहिए।

(6) निबन्ध-लेखन में संयत हास्य-व्यंग्य का पुट देना चाहिए, इससे निबन्ध रोचक और सजीव बन जाता है।

(7) निबन्ध लिख चुकने के बाद उसे एक बार पढ़कर उसमें वांछित संशोधन कर लेना चाहिए।

(8) निबन्ध का आकार विषय के अनुसार रखना चाहिए। इसका आकार एकदम बड़ा या छोटा नहीं होना चाहिए।

(9) वाक्य-विन्यास ठीक रखते हुए विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए। व्याकरण-सम्मत स्पष्ट भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(10) सभी विचारों को पूर्णता के साथ स्पष्ट रूप से व्यक्त करना चाहिए। क्रमबद्धता के साथ-साथ विचारों में सम्बद्धता का भी ध्यान रखना अनिवार्य है।

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
अथवा
सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध

संकेत बिन्दु–1. भूमिका (प्रस्तावना) 2. साइबर अपराध क्या है व उसका प्रसार-प्रभाव 3. साइबर की अपराध रोकथाम हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास 4. साइबर अपराध की रोकथाम हेतु सुझाव 5. उपसंहार (निष्कर्ष)।

1. भूमिका (प्रस्तावना)–आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति की है। इसके दूसरे पहलू की ओर दृष्टि डालते हैं तो इसके कारण अपराधीकरण की प्रवृत्ति भी फलीभूत हुई है। कहने का तात्पर्य है कि हम इन्टरनेट के माध्यम से जीवनोपयोगी कार्य स्वयं न करके कम्प्यूटर-लैपटॉप एवं मोबाइल से करते हुए डिजिटल कार्य करने के आदी हो गये। किन्तु कुछ शरारती तत्त्व हमें अपने लालच के जाल में फँसाकर साइबर क्राइम कर रहे हैं।

2. साइबर अपराध क्या है व उसका प्रसार-प्रभाव–इन्टरनेट का उपयोग कर कम्प्यूटर-लैपटॉप या मोबाइल के द्वारा किये गये कानून के विरुद्ध किये गए कार्य या अपराध को साइबर अपराध कहा जाता है अर्थात् साइबर क्राइम को हम ऐसा भी कह सकते हैं कि जब एक व्यक्ति मोबाइल, कम्प्यूटर व लैपटॉप में इन्टरनेट का इस्तेमाल करके किसी दूसरे व्यक्ति के साथ छल-कपट या धोखा कर गैर-कानूनी तरीके से अवांछित कार्य को अंजाम देता है तो उस व्यक्ति द्वारा किया गया कार्य साइबर अपराध की श्रेणी में आता है। ऐसा कार्य करने वाला व्यक्ति साइबर अपराधी कहलाता है। साइबर क्राइम में आपके मोबाइल या कम्प्यूटर नेटवर्क या डाटा को क्षति पहुँचाई जाती है या फिर आपके नेटवर्क या डाटा का इस्तेमाल कर ऑनलाइन किसी दूसरे गैर-कानूनी कार्यों को अंजाम दिया जाता है। इस प्रकार आपका पैसा हड़पने एवं आत्मसम्मान को गिराने के कई तरीके अपनाकर ब्लेकमेल किया जाता है जिससे कई व्यक्ति तो आत्महत्या तक करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

3. साइबर अपराध की रोकथाम हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास–साइबर क्राइम को रोकने के लिए सरकार सतत् प्रयासरत है। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल www.cybercrimegov.in लाँच किया गया है जिस पर साइबर अपराध की रिपोर्ट दर्ज कर समस्या का समाधान करवा सकते हैं। इसके अतिरिक्त 1930 नम्बर पर तुरन्त कॉल करने पर फ्रॉड द्वारा हड़पा गया धन वापिस मिलने की सम्भावना रहती है।

4. साइबर अपराध की रोकथाम हेतु सुझाव–अपने ई-मेल एवं अन्य किसी भी आई-डी के पासवर्ड कहीं नहीं लिखें, उन्हें केवल याद रखें। पासवर्ड को समय-समय पर बदलते रहें और इन्हें गोपनीय रखें। मोबाइल-लैपटॉप में एन्टीवायरस इंस्टॉल करके रखें। अपने पुराने मोबाइल, कम्प्यूटर एवं लैपटॉप बेचने से पूर्व अपने अकाउण्ट में जाकर अपनी आई-डी रिमूव अवश्य करें। मनी ट्रांसफर एप्स पर कार्य पूर्ण होते ही लॉग आउट अवश्य करें। लालच भरे फर्जी कॉल्स के चक्कर में न पड़ें अपितु उन्हें ब्लॉक करें, मोबाइल एवं लैपटॉप की सर्च हिस्ट्री समय-समय पर रिमूव करते रहें। इन उपायों के द्वारा हम साइबर अपराध से काफी हद तक बच सकते हैं।

5. उपसंहार (निष्कर्ष)–उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यही कहा जा सकता है कि इन्टरनेट ने हमारे जीवन के कार्यों को जितना सरल, सुगम एवं मनोरंजक बनाया है उतना इसने जीवन को जटिल भी बना दिया है। अत: आवश्यकता है कि इसका उपयोग सावधानीपूर्वक करें क्योंकि सावधानी हटी और दुर्घटना घटी।

2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) वरदान या अभिशाप
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमत्ता
अथवा
कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है

संकेत बिन्दु–1. प्रस्तावना (भूमिका) 2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रसार 3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव (हानि-लाभ) 4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रयोग हेतु सुझाव 5. उपसंहार (निष्कर्ष)।

1. प्रस्तावना (भूमिका)–प्राणि जगत् में सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानव को माना जाता है। वह अपनी बौद्धिक क्षमता से किसी कार्य के सही-गलत का निर्णय कर सकता है। बुद्धिमत्ता के माध्यम से ही नये-नये आविष्कार अर्थात् विज्ञान की खोज की गई है। मानव की एक अत्याधुनिक खोज है 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' जो वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में चर्चा का विषय बनी हुई है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर मानव द्वारा निर्मित यन्त्र मानव से भी अधिक बेहतर क्षमता से, मानव से